
nava graha karAvalamba stotram

——
नवग्रह करवलम्बस्तोत्रम्

——
Document Information



Text title : nava graha karaavalamba stotram

File name : navagrahakaraa.itx

Category : navagraha, stotra, nava

Location : doc_z_misc_navagraha

Author : Traditional

Transliterated by : P.V.R Narasimha Rao

Proofread by : P.V.R Narasimha Rao

Latest update : August 23, 2000

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

September 14, 2022

sanskritdocuments.org



nava graha karAvalamba stotram

नवग्रह करावलम्बस्तोत्रम्



ज्योतीश देव भुवनत्रय मूलशक्ते
गोनाथ भासुर सुरादिभिरीधमान ।
नृणांश्च वीर्यं वर दायक आदितेव
आदित्य वेध मम देहि करावलम्बम् ॥ १ ॥

नक्षत्रनाथ सुमनोहर शीतलांशो
श्री भार्गवी प्रिय सखोदर श्वेतमूर्ते ।
क्षीराब्धिजात रजनीकर यारुशील
श्रीमञ्छशांक मम देहि करावलम्बम् ॥ २ ॥

रुद्रात्मजात बुधपूजित रौद्रमूर्ते
ब्रह्मण्य मंगल धरात्मज बुद्धिशालिन् ।
रोगार्तिहार ऋणमोचक बुद्धिदायिन्
श्री भूमिजात मम देहि करावलम्बम् ॥ ३ ॥

सोमात्मजात सुरसेवित सौम्यमूर्ते
नारायणप्रिय मनोहर दिव्यकीर्ते ।
धीपाटवप्रद सुपंडित यारुभाषिन्
श्री सौम्यदेव मम देहि करावलम्बम् ॥ ४ ॥

वेदान्तज्ञान श्रुतिवाच्य विभासितात्मन्
ब्रह्मादि वन्दित गुरो सुर सेवितांघ्रे ।
योगीश ब्रह्म गुण भूषित विश्व योने
वागीश देव मम देहि करावलम्बम् ॥ ५ ॥

उल्लास दायक कवे भृगुवंशजात
लक्ष्मी सखोदर कलात्मक भाग्यदायिन् ।
कामादिरागकर दैत्यगुरो सुशील
श्री शुक्रदेव मम देहि करावलम्बम् ॥ ६ ॥

शुद्धात्म ज्ञान परिशोभित कालरूप

छायासुनन्दन यमाग्रज कुरयेष्ट ।

कष्टाधीनिष्ठकर धीवर मन्दगामिन्

मार्तंडजात मम देहि करावलम्बम् ॥ ७ ॥

मार्तंड पूर्वा शशि मर्दक रौद्रवेश

सर्पाधिनाथ सुरभीकर दैत्यजन्म ।

गोमेधिकाभरण भासित भक्तिदायिन्

श्री राहुदेव मम देहि करावलम्बम् ॥ ८ ॥

आदित्य सोम परिपीडक शिखवर्ण

डे सिंछिकातनय वीर भुजंग नाथ ।

मन्दस्य मुष्य सभ धीवर मुक्तिदायिन्

श्री केतु देव मम देहि करावलम्बम् ॥ ९ ॥

मार्तंड यन्द्र कुज सौम्य बृहस्पतीनाम्

शुक्रस्य भास्कर सुतस्य य राहु मूर्तेः ।

केतोश्च यः पठति भूरि करावलम्ब

स्तोत्रम् स यातु सकलांश्च मनोरथारान् ॥ १० ॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

॥ ॐ तत् सत् ॥

Composed by P.V.R Narasimha Rao of <http://www.sjvc.net/>

nava graha karAvalamba stotram

pdf was typeset on September 14, 2022

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

